



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित  
द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

# “रंगमंच : कला एवं व्यवसाय”

19-20 मार्च 2018



**आयोजक**

विश्वविद्यालय संगीत एवं नाट्य विभाग

ललित कला संकाय

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

**स्मारिका**



## रंगमंच कला एवं व्यवसाय

**सुमित कुमार ठाकुर**

अभिनेता, छात्र-तृतीय सेमेस्टर  
विश्वविद्यालय संगीत एवं नाट्य विभाग,  
ल0ना0मि0वि0, दरभंगा

“रंगमंच कला एवं व्यवसाय” रंगमंच शब्द ही अपने आप में एक विशाल महत्व रखता है, जिसमें दुनियाँ की सारी कलाएँ समाविष्ट हैं। एक अभिनेता की दृष्टि से कहूँ तो रंगमंच एक अथाह समुद्र है, जिसका कोई अन्त नहीं है। नाटककार, निर्देशक और अभिनेता इन तीनों की सोच जब एक होती है तब जाकर किसी भी प्रस्तुति की सार्थकता मानी जाती है, ऐसा मेरा मानना है। रंगमंच में सभी शुद्ध कला को पूरी तरह से तो नहीं पर उपयोगिता के अनुसार सिखना ही पड़ता है। एक अभिनेता के तौर पर कहूँ तो अभिनय के चारों प्रकार आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक को निरन्तर प्रयास करना पड़ता है। अभिनेता को अपने शरीर (आंगिक), उच्चारण (वाचिक), वेश-भूषा, रूप-सज्जा, अलंकार, प्रोपटी (आहार्य) को मिलाकर पूरी सच्चाई (सात्विक) के साथ मंच पर अपने पात्र के रूप में प्रस्तुत करना होता है। मेरे लिए रंगमंच सर्वप्रथम कला है, जिसे दूसरी विधा की तरह सिखने की आवश्यकता होती है। वैसे कला तो जन्मजात होती है लेकिन निरन्तर अभ्यास करने से इसमें एक अविश्वसनीय निखार और बदलाव मैंने देखा है। रंगकर्म करने के लिए हमें इस विधा से जुड़कर इसे सिखना आवश्यक है। कुछ लोग इस क्षेत्र के बारे में अब भी ठीक से नहीं जानते हैं। मैंने ऐसे समाज और घर-परिवार के लोगों को देखा है, जिन्हें यह सुनकर आश्चर्य होता है कि रंगमंच, ड्रामा, अभिनय आदि विषयों की पढ़ाई भी होती है और जब उन्हें ये कहा जाता है कि इसी विषय में मास्टर डिग्री की भी पढ़ाई होती है तो उनका एक ही प्रश्न होता है इसका ‘व्यावसायिकरण’ अर्थात् जो विद्यार्थी इस विषय में डिग्री प्राप्त करते हैं तो उसके बाद उन्हें काम कहाँ से मिलता है ? वे अपना जीविकोपार्जन कैसे करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर मेरे पास उस वक्त न था और न अब है, क्योंकि आज मेरे लिए रंगमंच कला तो है पर व्यवसाय पूर्णरूप से नहीं। हम रंगमंच करके अपना और अपने परिवार को वो सुविधा नहीं दे पाते जो की एक व्यक्ति दूसरे क्षेत्र में सरकारी व गैर सरकारी नौकरी प्राप्त कर एक निश्चित आय पाकर दे पाता है। हम नाट्य विधा की पढ़ाई करते हैं लेकिन एक भ्रम में खुद को रखे हुए हैं कि ये करने के बाद कुछ नहीं तो शिक्षक की नौकरी तो मिल ही जाएगी। इस सच को जानते हुए कि हमारे यहाँ उतने पद ही नहीं हैं और दिन पर दिन इस विषय में पास होने वाले विद्यार्थी बढ़ते जा रहे हैं। कुछ लोग रंगमंच से सिर्फ इसलिए जुड़ते हैं ताकि वे अभिनय, निर्देशन, लेखन आदि अच्छे से सीख सकें, लेकिन जब उनका मन इसी क्षेत्र में लग जाता है और इसी क्षेत्र को व्यवसाय के रूप में आगे बढ़ाना चाहते हैं तो अचानक उनके कदम थम जाते हैं। वे दूसरी ओर रुख कर लेते हैं जहाँ रंगमंच का सिखाया हुआ सारा हुनर पूर्णरूप से व्यवसायिक तौर पर काम आता है, जिन्हें आज हम ‘सिनेमा’ कहते हैं। इसलिए सिनेमा टी.वी. में काम माँगे जाने पर यदि आप अपना अनुभव रंगमंच का बताते हैं तो आपकी कद्र की जाती है और आप बेहतर प्रदर्शन भी करते हैं। वैसे आज युवाओं में एक अजीब सी हड़बड़ाहट सी हो चुकी है, वे सब कुछ जल्दी से सिखकर तुरन्त सफलता प्राप्त करने के चक्कर में अधूरे ज्ञान के अकड़ में जीने लगे हैं। मेरे अनुसार रंगमंच कला



सिखने का क्षेत्र है, इससे छोटी-मोटी आमदनी तो शुरुआत के दिनों से ही प्राप्त होने लगती है, परन्तु जीवन-यापन के लिए हमें सोचना होगा। वर्तमान में सरकार द्वारा अनुदान भी मिलते हैं परन्तु विडंबना ये है कि उचित मानदेय कलाकारों तक ठीक से नहीं पहुँच पाता है। हालात ऐसे हो चुके हैं कि अब अनुभवी कलाकारों को पूर्वाभ्यास के लिए आने जाने तक की भी आर्थिक मदद ठीक से नहीं मिल पाती है। तब वे मजबूर हो जाते हैं दूसरे क्षेत्रों में काम करने को ताकि वे अपने घर-परिवार को ठीक से चला सके, पर रंगकर्म करना नहीं छोड़ते हैं। प्रश्न ये है कि कार्य से तो हमें रंगमंच व्यवसायिक बना ही देता है परन्तु जीविका ? इस विषय पर कई गोष्ठियाँ होती रहती हैं पर परिणाम उन्हीं गोष्ठियों तक सीमित रहती है। आखिर में यही कहूँगा कि रंगमंच सर्वप्रथम वो कला है जिसे सीखकर करने में सिर्फ आनंद प्राप्त होता है। इस आनंद के पीछे समाज, घर-परिवार के ताने-बाने, धन, सुख-सुविधा सब पीछे छुट जाते हैं। रंगमंच कला तो है पर व्यवसाय विभिन्न क्षेत्रों के लिए आज भी एक सवाल के रूप में है ? बिहार की बात करूँ तो यहाँ रंगमंच करने के लिए युवाओं को सरकार की ओर से कोई बढ़ावा नहीं मिलता है और रंग कला में अनुभव प्राप्ति के पश्चात् यहाँ टी.वी. और सिनेमा में भी कोई संभावना नहीं है। इसलिए युवाओं को दूसरे क्षेत्रों में पलायन करना पड़ता है। इस विषय पर कई विशेषज्ञ और साहित्यकारों के अपने-अपने मत रहे हैं।